The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Special Issue 1 | February 2026
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

शिक्षा और नैतिक मूल्यों का संरक्षण

धनेश्वरी साहू

सहायक प्राध्यापक (शिक्षा), देव संस्कृति कॉलेज ऑफ, एजुकेशन एण्ड टेक्नालाजी खपरी दुर्ग

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18797624

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 16-01-2026

Published: 05-02-2026

Keywords:

शिक्षा, परिवार, समाज, नैतिक चरित्र, सामाजिक व्यवस्था

ABSTRACT

वर्तमान वैश्वीकृत एवं तकनीकी युग में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का प्रसार नहीं – जीवन में नैतिक मूल्यों का विकास भी है। समाज में बढ़ती प्रतिस्पर्धा, उपभोक्तावाद, हिंसा, भ्रष्टाचार, नैतिक गिरावट, और संवेदनहीनता जैसे संकट नैतिक शिक्षा की आवश्यकता को पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण बनाते हैं। यह शोध–पत्र शिक्षा एवं नैतिक मूल्यों के संरक्षण की आवश्यकता, उनकी विशेषताओं, संरक्षण के लिए आवश्यक रणनीतियों, परिवार, समाज, विद्यालय और सरकार की भूमिका तथा भविष्य की चुनौतियों पर विस्तृत प्रकाश डालता है। शोध से स्पष्ट है कि नैतिक मूल्यों का संरक्षण न केवल व्यक्ति के चरित्र निर्माण के लिए आवश्यक है बल्कि यह एक समृद्ध, शांतिपूर्ण और मानवीय समाज की आधारशिला भी है।

प्रस्तावना

शिक्षा केवल परीक्षाओं में अच्छे अंक लाने या रोजगार प्राप्त करने का साधन नहीं है । शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास – शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मिक और नैतिक सुनिश्चित करना है । शिक्षा तभी सार्थक मानी जाती है जब वह मनुष्य को मानवीय संवेदनशीलता और नैतिक चरित्र से सम्पन्न बनाए । आज की दुनिया में तकनीकी उन्नति ने जीवन को सुविधाजनक बनाया है , लेकिन साथ ही नैतिक मूल्यों का ह्रास भी तेजी से बढ़ा है । बच्चे सोशल मीडिया,

भौतिकवाद, और अनियंत्रित सूचना स्त्रोतों के बीच बड़े हो रहे हैं । ऐसे वातावरण में शिक्षा का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है ।

शिक्षा की अवधारणा और महत्व

1) शिक्षा का अर्थ

शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार, विचार, ज्ञान, कौशल , और नैतिकता का विकास होता है । महात्मा गांधी ने कहा था– "सच्ची शिक्षा वह है जो मनुष्य के शरीर, मन, और आत्मा का संतुलित विकास करे"।

2) शिक्षा के उद्देश्य

- ज्ञान का अर्जन।
- चरित्र का निर्माण।
- कौशल एवं योग्यता का विकास।
- सामाजिक उत्तरदायित्व का भाव।
- नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विकास।
- मानवीय दृष्टिकोण का निर्माण।

नैतिक मूल्यों की अवधारणा

नैतिक मूल्य वे गुण एवं सिद्धांत हैं जो मनुष्यों को सही और गलत, उचित और अनुचित, न्याय और अन्याय का विवेक प्रदान करते हैं ।

मुख्य नैतिक मूल्य

- सत्य
- अहिंसा
- करुणा
- सहयोग

- अनुशासन
- सम्मान
- ईमानदारी
- संवेदनशीलता
- सहिष्णुता
- कर्तव्यपरायणता
- पर्यावरण संरक्षण
- सेवा भावना
- आत्मसंयम

नैतिक मूल्यों के संरक्षण की आवश्यकता

- **सामाजिक परिवर्तन**– आधुनिक समाज में परिवार संरचना संयुक्त परिवार से बदलकर एकल परिवार हो चुकी है। माता–पिता के पास समय की कमी है जिससे संस्कारों का प्राकृतिक हस्तांतरण कम हो गया है।
- **व्यक्ति के चरित्र निर्माण के लिए**– नैतिक मूल्य व्यक्ति के भीतर अच्छे–बुरे, सही–गलत का भेद करने की क्षमता विकसित करते हैं। नैतिक मूल्य कमजोर होने पर व्यक्ति स्वार्थी, अनुशासनहीन और गलत दिशा में बढ़ सकता है।
- **भ्रष्टाचार और अपराध नियंत्रण के लिए**–भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी, झूठ, चोरी, हिंसा आदि अनैतिक व्यवहार हैं। नैतिक मूल्यों का संरक्षण इन बुराइयों को कम करता है और एक स्वस्थ सामाजिक व्यवस्था कायम रखता है।
- **पारिवारिक जीवन की मजबूती हेतु**– परिवार में प्रेम, आदर, अनुशासन, दया, और सहयोग जैसे मूल्य ही परिवार को एकजुट रखते हैं।
- **युवाओं के सही मार्गदर्शन हेतु**– आज का युवा सोशल मीडिया, गलत संगति और तनावपूर्ण जीवन में उलझा है । नैतिक मूल्य उसे अनुशासन, संयम और सही दिशा प्रदान करते हैं।

- **डिजिटल एवं तकनीकी युग में आवश्यक**– ऑनलाइन फेक न्यूज, साइबर अपराध, ट्रोलिंग, और डिजिटल हिंसा बढ़ रही है। डिजिटल नैतिकता का संरक्षण आधुनिक समय की प्रमुख जरूरत है।

नैतिक मूल्यों के प्रमुख प्रकार

- **व्यक्तिगत नैतिक मूल्य**– ईमानदारी, आत्मानुशासन, धैर्य, सादगी, आत्मसम्मान, आत्मनियंत्रण।
- **सामाजिक नैतिक मूल्य**– सहयोग, समानता, भाईचारा, सम्मान, सहिष्णुता।
- **राष्ट्रीय नैतिक मूल्य**– देशभक्ति , राष्ट्र निर्माण, कानून का पालन, सामाजिक न्याय।
- **आध्यात्मिक नैतिक मूल्य**– सत्य, अहिंसा, करुणा, आत्मचिंतन, मानव सेवा।
- **पर्यावरणीय नैतिक मूल्य**– प्रकृति संरक्षण, पशु–पक्षियों का सम्मान, संसाधनों का उचित उपयोग।

नैतिक मूल्यों का महत्व

- व्यक्ति का चरित्र निर्माण।
- समाज में सद्भाव की स्थापना।
- अपराध दर में कमी।
- विद्यालयों में अनुशासन और सकारात्मक वातावरण।
- समानता और न्याय की स्थापना।
- मानवीय गुणों का विकास।
- राष्ट्र के विकास में योगदान।

शिक्षा और नैतिक मूल्यों का संबंध

शिक्षा नैतिक मूल्यों को विकसित करने का सबसे प्रभावी साधन है क्योंकि –

- यह ज्ञान के साथ विवेक प्रदान करती है।
- यह सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करती है।

- यह सही–गलत का निर्णय करना सिखाती है।
- विद्यालय का वातावरण नैतिक शिक्षा का प्रमुख माध्यम है।
- शिक्षक बच्चों के आदर्श होते हैं, जिनके व्यवहार से वे मूल्य सीखते हैं।

शिक्षा के माध्यम से नैतिक मूल्यों का संरक्षण

1) विद्यालय स्तर पर उपाय

- नैतिक शिक्षा विषय का समावेश
- योग, ध्यान, प्रार्थना
- समूह चर्चा
- समयपालन
- स्वच्छता

2) शिक्षक की भूमिका

- शिक्षक अपने व्यवहार और व्यक्तित्व से मूल्य प्रदान करते हैं ।
- शिक्षक विद्यार्थियों में न्याय, समानता और संवेदनशीलता का विकास करते हैं ।

3) परिवार की भूमिका

- माता–पिता का आचरण, भाषा और व्यवहार बच्चे अपनाते हैं ।
- संयुक्त परिवार में सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य स्वतः प्राप्त होते हैं ।
- घर में सम्मान, सहयोग और अनुशासन का वातावरण नैतिक मूल्यों को मजबूत करता है ।

4) समाज और समुदाय की भूमिका

- धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थाएँ
- सामाजिक संगठन
- आदर्श व्यक्तित्व

- मीडिया और तकनीक का सकारात्मक उपयोग।
- शैक्षिक कार्यक्रम।
- प्रेरणादायक फिल्में।
- सामाजिक अभियानों में भागीदारी।

5) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)

- चरित्र निर्माण आधारित शिक्षा।
- 21वीं सदी के कौशल।
- भारतीय ज्ञान परंपरा।
- पारिवारिक और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण।
- मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक और नैतिक विकास।

निष्कर्ष

शिक्षा और नैतिक मूल्य एक दूसरे के पूरक हैं। जहाँ शिक्षा ज्ञान है, वहीं नैतिक मूल्य उसे दिशा प्रदान करते हैं। आधुनिक समय में नैतिक मूल्यों के ह्रास ने समाज को अनेक चुनौतियों के समक्ष खड़ा कर दिया है। अतः शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक बन गया है ।

संदर्भ (References)

- Dewey, J. (1916). *Democracy and Education*. Macmillan.
- NCERT. (2020). *National Education Policy 2020*. Government of India.
- Gandhi, M. K. (1947). *Basic Education*. Navajivan Publishing House.
- Sharma, R. (2018). *Value Education in Schools*. New Delhi: Sage Publications.
- UNESCO. (2015). *Global Education Monitoring Report: Education for All*. Paris: UNESCO.

- Kohlberg, L. (1981). *Essays on Moral Development: Vol. I, The Philosophy of Moral Development*. Harper & Row.
- Lickona, T. (1991). *Educating for Character: How Our Schools Can Teach Respect and Responsibility*. Bantam.
- Bisht, R., & Singh, S. (2019). *Role of Family in Moral Education*. Journal of Educational Research, 22(3), 45–56.
- Bhattacharya, S. (2020). *Ethics and Moral Values in Contemporary Education*. New Delhi: PHI Learning.
- Kumar, P. (2017). *Value-Oriented Education and Its Significance*. International Journal of Education, 5(2), 12–21.
- Ministry of Education, Government of India. (2020). *NEP Guidelines on Value Education*.
- Lickona, T., & Davidson, M. (2005). *Smart & Good Schools: Integrating Excellence and Ethics for Success in School, Work, and Beyond*. TarcherPerigee.
- Sharma, V. (2016). *Role of Teachers in Moral Development of Students*. International Journal of Education and Practice, 4(6), 89–97.
- NCERT. (2019). *Teacher's Handbook on Yoga, Meditation, and Value Education*. New Delhi: NCERT.
- UNESCO. (2017). *Education for Sustainable Development and Global Citizenship*. Paris: UNESCO.